Prabhat Khabar (Date: - 16/12/2019)

सराहनीय • बिहार स्टेट टूरिज्म डेवलपमेंट लिमिटेड शुरू करा रहा काम, लोगों में खुशी

2.11 करोड़ से छठ घाट समेत अन्य कार्यों का शुभारंभ

- एक सप्ताह के भीतर पुनपुन में दूसरी बड़ी योजना का शुभारंभ

प्रतिनिधि ▷ मसौढ़ी

पुनपुन प्रखंड मुख्यालय स्थित पुनपुन नदी घाट पर रविवार को दो करोड़ 11 लाख 47 हजार की लागत से छठ घाट समेत अन्य कार्य का शुभारंभ सामाजिक कार्यकर्ता मधुसूदन कुमार के हाथों किया गया. बिहार स्टेट टूरिज्म डेवलपमेंट लिमिटेड द्वारा कराये जा रहे इस कार्य के तहत हो रहे कार्य को लेकर पुनपुन के लोगों में खुशी है. इसके लिये लोगों ने सूबे के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के प्रति आभार प्रकट किया है. गौरतलब है कि एक सप्ताह के भीतर पुनपुन प्रखंड मुख्यालय में दो बड़ी योजना के कार्य का शुभारंभ किया गया है.

पुनपुन में घाट निर्माण कार्य का शुभारंभ करते अतिथि.

बीते एक सप्ताह पूर्व 51 करोड़ की लागत से पुनपुन नदी घाट पर बहुप्रतिक्षित लक्ष्मण झूला के तर्ज पर केबल संस्पेंशन ब्रिज के कार्य का शुभारंभ हो चुका है. जानकारी के अनुसार पुनपुन नदी घाट के दक्षिणी छोर पर स्थित जाहिदपुर टोला के पास 2,11,47000 की लागत से करीब 110 फिट लंबा छठ घाट का निर्माण समेत घाट पर महिला शौचालय व चेंजिंग रूम के साथ-साथ प्रकाश व्यवस्था के कार्य का शुभारंभ किया गया. जेपी कंस्ट्रक्शन द्वारा कराये जा रहे इस कार्य को 15 माह में पूरा कर लेना है.

गौरतलब है कि बीते वर्ष 2015 के सात जनवरी को पुनपुन स्थित जाहिदपुर में पूरे सूबे में एक साथ पेटाभैलेंट वैक्सीन के शुभारंभ के मौके पर पहुंचे तत्कालीन मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी ने लोगों की मांग पर पुनपुन घाट पर छठ घाट समेत अन्य कार्य कराने की घोषणा की थी. उनकी घोषणा के तीन वर्ष बाद तक इस दिशा में कोई सार्थक पहल नहीं हो पाने के बाद 26 जनवरी 2018 को उसी मैदान पर गणतंत्र दिवस के मौके पर महादलित बुजुर्ग द्वारा झंडोतोलन के मौके पर पहुंचे सूबे के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के समक्ष पुनपुन के सामाजिक कार्यकर्ता मधुसूदन कुमार समेत अन्य लोगों ने इसके प्रति उनका ध्यान आकृष्ट कराते हुए अविलंब छठ घाट समेत महिलाओं के लिए घाट पर शौचालय व उनके कपड़ा बदलने के लिए चेंजिंग रूम के निर्माण की मांग रखते हुए पूर्व की घोषणा की याद दिलायी. ग्रामीणों ने मुख्यमंत्री से आग्रह किया था कि पुनपुन अंतरराष्ट्रीय पिंडदान स्थल होने की वजह से इसका निर्माण कराना आवश्यक है. उसी मंच से मुख्यमंत्री ने इस कार्य की स्वीकृति दी थी.

Prabhat Khabar (Date: - 16/12/2019)

कृषि यंत्रों का बैंक बनायेंगी जीविका की दीदियां

JEEViKA

संवाददाता ▷ पटना

फसल अवशेष प्रबंधन से लेकर खेती के कार्यों में उपयोग होने वाले कृषि यंत्रों का बैंक बनाया जायेगा. इसमें कोई किसान 40 लाख, 20 लाख और दस लाख की तीन योजनाओं के तहत कृषि यंत्रों की खरीद कर सकता है. यंत्रों की खरीद के लिए कृषि विभाग की ओर से अनुदान दिया जायेगा. बैंक बनाने के बाद उस किसान से अन्य किसान भाड़े पर कृषि यंत्र का उपयोग करेंगे. अब इस योजना के तहत जीविका के दीदियों को भी जोड़ा जा रहा है. जीविका के माध्यम से बने स्वयं सहायता समूह भी अब कृषि यंत्र बैंक बना सकते हैं. मुख्यमंत्री के निर्देश पर इस योजना के कृषि विभाग की ओर से शुरू की जा चुकी है.

मानव श्रृंखला में कृषि के चार घटक

अगले माह 19 जनवरी को जल– जीवन – हरियाली के तहत बनायी जाने वाली मानव श्रृंखला में कृषि विभाग भी शामिल होगा. इसको लेकर विभाग में तैयारियां शुरू की गयी हैं. जानकारी के अनुसार इस अभियान में विभाग की ओर से वाटर सेड का निर्माण, सूक्ष्म सिंचाई कार्यक्रम, फसल अवशेष प्रबंधन की मशीन और जैविक कॉरिडोर को लेकर होने वाले कार्यक्रम को शामिल किया जा रहा है. गौरतलब है कि फसल अवशेष प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए कृषि विभाग ने हैपी सिडर से लेकर अन्य मशीनों पर 80 फीसदी का अनुदान किया गया है. अब तक दो लाख 39 हजार चार सौ 38 किसानों ने कृषि यंत्र खरीद में अनुदान पाने के लिए ऑनलाइन आवेदन किया है.

Prabhat Khabar (Date: - 16/12/2019)

सरस मेला : 15 दिनों में बिके आठ करोड़ से अधिक के सामान

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

ग्रामीण विकास विभाग के तत्वावधान में जीविका द्वारा गांधी मैदान में आयोजित 15 दिवसीय सरस मेला का रविवार को समापन हो गया. अंतिम दिन मेले में रिकॉर्ड भीड़ उमड़ी. दोपहर से मेले में उमड़ी भीड़ देर शाम तक कायम रही. आयोजकों के मुताबिक पंद्रह दिनों में आठ करोड़ रुपये से ज्यादा के उत्पादों और व्यंजनों की खरीद-बिक्री हुई है. इस मौके पर सरस मेला में बेहतर प्रदर्शन करने वाले स्टॉल धारकों को पुरस्कृत भी किया गया.

समापन समारोह में शामिल हुए अधिकारी

देर शाम मुख्य मंच पर हुए समापन समारोह में मुख्यमंत्री के सलाहकार अंजनी कुमार सिंह, ग्रामीण विकास विभाग के सचिव अरविंद कुमार चौधरी और जीविका के सीइओ बालामुरुगन डी मौजूद रहे. अंजनी कुमार सिंह ने कहा कि बिहार में हुआ परिवर्तन, जीविका का परिवर्तन है. आज बिहार में कोई भी बड़ा काम करने के लिए जीविका की मदद मायने रखती है. उन्होंने दर्शकों से 19 जनवरी को आयोजित मानव श्रृंखला में शामिल होने की अपील की. अरविंद कुमार चौधरी ने कहा कि सरस मेला ग्रामीण उत्पादों को प्रोत्साहन देने के साथ ही महिला सशक्तीकरण को भी गति देती है. शुरुआती दौर में गिनती के स्वयं सहायता समूह की गिनती आज लाखों में हो रही है.

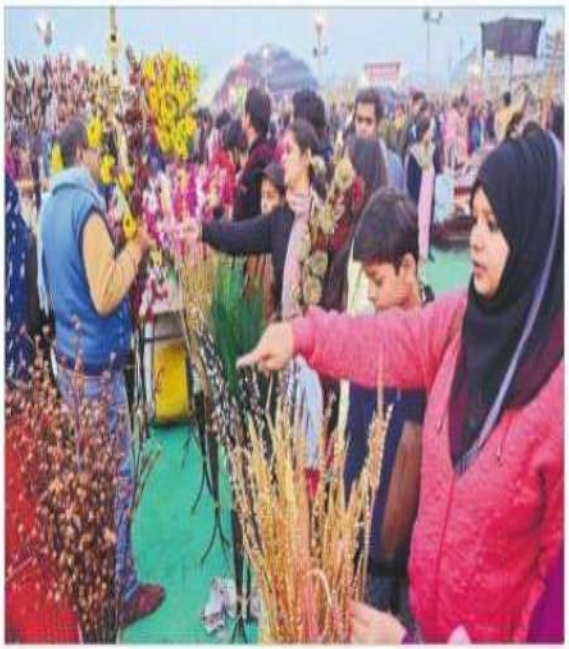

सांस्कृतिक कार्यक्रम ने मन मोहा

समापन समारोह के अवसर पर सांस्कृतिक संध्या में लोक गीत और नृत्य की प्रस्तुति ने समां बांधा. वहीं एआरके बैंड द्वारा रॉक शो की प्रस्तुति एवं कानपुर से आये तानसेन ग्रुप द्वारा भष्म आरती, शिव तांडव तथा लोक नृत्य की प्रस्तुति ने दर्शकों का मन मोह लिया. इसके साथ ही जीविका दीदियों द्वारा संचालित शिल्प ग्राम द्वारा बिहार राज्य की पारंपरिक परिधानों को आधुनिक समाज में प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से रैंप शो का आयोजन किया गया. इन प्रस्तुतियों को देख दर्शकों ने भरपूर तालियां बजायी.

Hindustan (Date: - 16/12/2019)

बीआईटी, ईको पार्क व एसके मेमोरियल परिसर में केंद्रों का आज उद्घाटन करेंगे उपमुख्यमंत्री

पटना की हवा की निगहबानी अब चार केंद्रों से

पटना | हिन्दुस्तान ब्यूरो

देश और दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों में शुमार पटना की आवोहवा पर अब प्रभावी ढंग से नजर रखी जा सकेगी। राजधानी में अभी तक सिर्फ एक वायु गुणवत्ता जांच केंद्र है। मगर अब तीन और केंद्र खोले जा रहे हैं। यह केंद्र बीआईटी, ईको पार्क और एसके मेमोरियल हॉल परिसर में स्थापित किए गए हैं। सोमवार को उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी ईको पार्क से इन केंद्रों का उद्घाटन करेंगे। राज्य में फिलहाल सिर्फ तीन शहरों पटना, गया और मुजफ्फरपुर में ही एक-एक वायु गुणवत्ता जांच केंद्र है। यही कारण है कि देश में वायु की गुणवत्ता की जांच में सिर्फ इन्हीं तीन शहरों का जिक्र आता है। पटना में यह केंद्र तारामंडल में स्थापित है। इसका उद्घाटन उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी ने आठ जुलाई, 2011 को किया था। गया और मुजफ्फरपुर समाहरणालय में एक-एक केंद्र उसके बाद वर्ष 2014 में स्थापित हुए। अब राज्य सरकार द्वारा पटना में पांच, मुजफ्फरपुर और गया में एक-एक अतिरिक्त केंद्र खोला जा रहा है। हाजीपुर में भी एक केंद्र स्थापित करने की पहल की गई है। इनमें से तीन केंद्रों का शुभारंभ सोमवार को उपमुख्यमंत्री करेंगे।

इलेक्ट्रोनिक डिस्प्ले बोर्ड पर दिखेगी मौसम की भी स्थिति

इन केंद्रों में स्वचालित उपकरणों की सहायता से वायु में प्रदूषकों के स्तर की मॉनिटरिंग की जाएगी। इसके जरिए कण पदार्थ पीएम-10 और पीएम-2.5 के अलावा गैसीय प्रदूषकों मसलन सल्फर डाईआक्साइड, नाइट्रोजन आक्साइड, कार्बन मोनो आक्साइड, बेंजीन आदि की स्थिति पर नजर रखी जाएगी। मौसम संबंधी मानदंडों जैसे वायु की गति, उसकी दिशा, तापमान, आर्द्रता सहित अन्य आंकड़े लगातार प्राप्त होंगे। इलेक्ट्रानिक डिस्प्ले के जरिए इन्हें प्रदर्शित किया जाएगा।

मानक का वर्गीकरण

0 से 50	अच्छा
51 से 100	संतोषजनक
101 से 200	मध्यम
201 से 300	खराब
301 से 400	बहुत खराब
401 से अधिक	बेहद गंभीर

Hindustan (Date: - 16/12/2019)

200 से अधिक भिखारी रहते हैं गृद्धकूट पर्वत की राह पर, अधिकतर चोटियां गिद्ध की चोंच के आकार की

राजगीर के भिखारी जानते हैं कई भाषाएं

वल्चर पीक (राजगीर) | का.सं

राजगीर का वल्चर पीक। अर्थात गृद्धकूट पर्वत। अधिकतर चोटियां गिद्ध के चोंच के आकार की। धरातल से 216 सीढ़ियों का फासला। थका देने वाला उतार-चढ़ाव। लेकिन, बुद्ध का प्रिय स्थल। कई बार दिये प्रवचन। दूसरे धर्मचक्र प्रवर्तन का सिद्धांत यहीं तय हुआ था। पद्मसूत्र प्रस्तुत किया था। कई और हैं महत्व। फलतः यह सबसे पावन स्थान बना। कहा जाता है, बौद्धिस्टों का मक्का मदीना। पहली 108 सीढ़ियां का सफर। काफी रोचक। लघु विश्व के दृश्य। 10 फीट चौड़ी कंक्रीट राह। एक ओर भिखारियों की पंक्ति। संख्या 200 से अधिक। तो दूसरी ओर, दुकाने ही दुकानें। किताबों की दुकानें। खाद्य पदार्थों की गुमटियां। मोती-मूंगों की मालों की झोपड़ियां। खाता (चुनरी)। नूडल्स। छोले-बटोरे। पिज्जा-बर्गर... आदि के विक्रय स्थल। सबसे खास। सबसे अनूठी। सीखने योग्य। कई भाषाओं का सम्मिश्रण। वहां से गुजरे जापानी पर्यटक। भिखमंगे बोलने लगे। वातासी वा तोतेमो माजुसी तसुकेते। कमी गा अनत ओ तसुकेते कुदासैमसु। थोड़ी ही देर बाद वर्मीज टीम। भिखारियों की ओर से आने लगी आवाज। नगार अरम सैनरेलतलं। भुरार राहकैन के मइन को कुनये लिमॉल। चाइनीज टीम पहुंची। वां हेनं क्यांग। वांग नांग वो। सांगदी होय वांग्जु नी। वहीं, हर कुछ दूरी पर सुनाई देगी। आई ऐम पुअर। हेल्प मी। गॉड विल हेल्प यू। सबका अर्थ समान। मैं गरीब हूं। मेरी मदद करें।

गृद्धकूट पर्वत पर जाने वाली राह में भिखमंगों की लगी कतार।

हिन्दू-जैन की तरह ही 108 का महत्व

हिन्दू-जैन की तरह बौद्ध में 108 की महत्ता है। कारण, मनुष्यों में 108 तरह की भावनाएं पैदा लेती हैं। जापान में सांसारिक प्रलोभन का प्रतीक है 108। इसका त्याग ही है निर्वाण का बेहतर मार्ग। **खुफिया तंत्र बेजोड़ :** भिखारी ही नहीं। यहां से जुड़े सभी का खुफिया तंत्र बेजोड़ है। सीढ़ियों पर कोई अधिकारी अथवा पुलिस जाए तो तुरंत ही खबर पहुचं जाती है वल्चर पीक तक।

भिखारियों की भी होती है योग्यता

पर्यटक भारतीय हों तो मजे ही मजे। वे दिल्लगी करते पहुंचते हैं वल्चर पीक। एक सफर में कम से कम 6 भाषाएं अवश्य सुनेंगे। वह भी भिखारियों से। कारण, रोजाना 5 से 10 देशों की टीमें जरूर आती हैं। हर भिखारी की औसतन रोजाना आमदनी हजार से अधिक।

लेते हैं ट्रेनिंग : कारो देवी, सिथौरनी देवी, संजू देवी, प्रियंका कुमारी, बांधो देवी...। सभी बताते हैं। उनकी भी योग्यता है। कम से कम 3 भाषा जानने की। वृद्ध भिखारियों से ट्रेनिंग लेते हैं। सिर्फ भाषाओं की नहीं। बोलने की। पेश आने की।

Hindustan (Date: - 16/12/2019)

अब एक क्लिक पर मिलेगा सिलाव का प्रसिद्ध खाजा

एप से फायदा

बिहारशरीफ | कार्यालय प्रतिनिधि

अब एक क्लिक पर सिलाव का खाजा विदेश पहुंचेगा। देशभर के लोग भी घर बैठे लाजवाब स्वाद का लुत्फ उठा सकते हैं। उद्योग विभाग ने खाजा के व्यवसाय के लिए एप बनाया है। इससे ऑनलाइन बुकिंग शनिवार से शुरू हो गयी। कई लोगों ने खाजा का ऑनलाइन ऑर्डर दिया है, जिसकी डिलेवरी भी की गयी। खाजा को भारत सरकार द्वारा जीआई टैग दिया गया है। खाजा व्यवसायी संजय लाल बताते हैं कि देश व विदेश के लोगों को ऑनलाइन खाजा पहुंचाने के लिए 'श्री काली साह' नाम से एप बनाया गया है। डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू. एसआर आईकेएएल आईएसएएच. सीओएम को लॉगऑन कर खाजा का ऑर्डर कर सकते हैं। विदेशों में डिलेवरी देने के लिए एयर कूरियर व देश के विभिन्न प्रदेशों के लिए साधारण कूरियर सेवा बहाल की गयी है। बुकिंग के समय ही ग्राहक ऑनलाइन पेमेंट कार्ड के माध्यम से सकते हैं। विदेशों में 3 से चार दिन तो देश के विभिन्न हिस्सों में 4 से 5 दिन में डिलेवरी दे दी जाती है।

10 लाख का हर दिन कारोबार : सिलाव खाजा औद्योगिक स्वावलंबी सहकारी समिति के अध्यक्ष अभय शुक्ला बताते हैं कि सिलाव में खाजा की करीब 100 दुकानें हैं।

सिलाव की दुकान से खाजा की खरीदारी करते सैलानी। • हिन्दुस्तान

मॉरीशस में मिला था अंतरराष्ट्रीय मिठाई का अवार्ड

संजय लाल बताते हैं कि वर्ष 1987 में मॉरीशस में हुए अंतरराष्ट्रीय मिठाई महोत्सव में सिलाव के खाजा को अंतरराष्ट्रीय मिठाई का अवार्ड मिल चुका है। इसके अलावा दिल्ली, जयपुर, इलाहाबाद, पटना में लगी प्रदर्शनियों में भी खाजा को स्वादिष्ठ मिठाई का पुरस्कार मिला था।

मिठाई का राजा है खाजा

52 परतल वाला खस्ता व लजीज खाजा की मुरीद हर खाने वाला हो जाता है। इसका स्वाद ऐसा कि एक बार खा लें तो बार-बार खाने का मन करता है। स्वादिष्ट मिठाई के रूप में मशहूर खाजा देश ही नहीं विदेश में भी प्रसिद्ध है। विदेशों से राजगीर व नालंदा के ऐतिहासिक स्थलों का दर्शन करने आने वाले लोग सिलाव का खाजा का स्वाद लेन नहीं भूलते हैं।

- बनाया गया एप, ऑनलाइन खाजा की होने लगी डिलेवरी
- जीआई टैग मिलने से खाजा का बढ़ा कारोबार

बिहार की पहली मिठाई जिसे मिला है जीआई टैग

सितावा खाजा बिहार की पहली मिठाई है जिसे भारत सरकार से जीआई (ज्योग्राफिकल इंडिकेशन) टैग मिला है। बिहार में मुजफ्फरपुर की शाही लीची, भागलपुर का कतरनी चावल, तसर सिल्क, जर्दालु आलू, मगही पान, सिक्की कला, सुजनी साड़ी, मधुबनी पेंटिंग आदि को भी जीआई टैग मिला है। जीआई टैग या भौगोलिक संकेत एक प्रकार की मुहर है जो किसी भी उत्पाद के लिए प्रदान किया जाता है।